

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 10 अध्याय 63 — कृष्ण और बाणासुर

5 October 2026



शोणितपुर की प्राचीरों के सम्मुख भगवान् शिव अपने भक्त बाणासुर की रक्षा के लिए नन्दी पर चढ़कर निकलते हैं, और भगवान् श्रीकृष्ण उनसे एक ऐसे युद्ध में मिलते हैं जो वैर में नहीं, एक स्तुति, एक वरदान और घर लौटते एक वर के साथ समाप्त होता है।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम में पुनः स्वागत है। दशम स्कन्ध के इस तिरसठवें अध्याय में यादव अनिरुद्ध को छुड़ाने चलते हैं, कृष्ण और शिव रणभूमि में आमने-सामने होते हैं, युद्ध की धूल से दो स्तुतियाँ उठती हैं, और प्रभु स्वयं बताते हैं कि सहस्रबाहु असुर को क्यों जीवित छोड़ा गया।

अध्याय-परिचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 10 (दशम स्कन्ध, उत्तरार्ध)
- अध्याय: 63 (त्रिषष्टितम अध्याय)
- अध्याय शीर्षक: भगवान् कृष्ण का बाणासुर से युद्ध

- मुख्य वक्ता: श्री शुकदेव गोस्वामी
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: बाणासुर की राजधानी शोणितपुर; और द्वारका
- केंद्रीय विषय: शोणितपुर का घेरा; कृष्ण और शिव का युद्ध; शिव-ज्वर की स्तुति; बाण की सहस्र भुजाएँ; शिव का स्तोत्र और प्रभु की कृपा; अनिरुद्ध की घर-वापसी
- मुख्य श्लोक-सीमा: स्कन्ध 10, अध्याय 63, श्लोक 1-53
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, द्वितीय भाग)

पूर्व अध्याय का संदर्भ

बाणासुर की पुत्री ऊषा ने स्वप्न में अनिरुद्ध को देखा, और उसकी सखी चित्रलेखा योगबल से उन्हें शोणितपुर में उसके अन्तःपुर में ले आई। रक्षकों की सूचना पर बाण ने राजकुमार को वहाँ पाया; अनिरुद्ध ने भेजे गए सैनिकों को तितर-बितर कर दिया, किन्तु असुर ने उन्हें नागपाश में बाँध लिया, और ऊषा रो पड़ी।

यादवों का शोणितपुर पर अभियान

शुकदेवजी ने कहा: वर्षा के चार महीने बीत गए और अनिरुद्ध के स्वजन, उनका कोई समाचार न पाकर, शोक में डूबे रहे। तब नारदजी आए और बताया कि राजकुमार बाण के योद्धाओं की एक पूरी टुकड़ी का संहार करने के बाद बन्दी बना लिए गए हैं। कृष्ण को अपना आराध्य मानने वाले वृष्णि तुरन्त शोणितपुर की ओर चल पड़े। बलराम और कृष्ण के नेतृत्व में बारह अक्षौहिणी सेना चली, साथ थे प्रद्युम्न, सात्यकि, गद, साम्ब, सारण, नन्द, उपनन्द, भद्र और अन्य श्रेष्ठ यादव, और उन्होंने बाण की राजधानी को घेर लिया। अपने उद्यानों, प्राचीरों, अट्टालिकाओं और द्वारों को ध्वस्त होते देख बाण क्रुद्ध होकर समान बल की सेना लेकर बाहर निकला।



नारदजी से अनिरुद्ध के बन्दी होने का समाचार पाकर वृष्णि बलराम और कृष्ण के नेतृत्व में बारह अक्षौहिणी सेना लेकर चले और बाणासुर की राजधानी को चारों ओर से घेर लिया।

अपने भक्त के लिए निकले भगवान् शिव

तब स्वयं कैलासपति अपने उपासक असुर के लिए रणभूमि में उतरे। नन्दी पर आरूढ़, प्रमथगणों से घिरे और कार्तिकेय को साथ लिए रुद्र ने दोनों भाइयों के विरुद्ध शस्त्र उठाए।

बाणार्थे भगवान् रुद्रः ससुतः प्रमथैर्वृतः ।

आरुह्य नन्दिवृषभं युयुधे रामकृष्णयोः ॥ ६ ॥

bāṇārthe bhagavān rudraḥ sa-sutaḥ pramathair vṛtaḥ āruhya nandi-vṛṣabhaṁ yuyudhe rāma-kṛṣṇayoḥ

अर्थ: बाण के लिए भगवान् रुद्र, अपने पुत्र सहित और प्रमथों से घिरे हुए, नन्दी वृषभ पर चढ़कर बलराम और कृष्ण से युद्ध करने लगे। (स्कन्ध 10, अध्याय 63, श्लोक 6)

फिर एक तुमुल, रोमांचकारी संग्राम छिड़ा: कृष्ण शंकर से, प्रद्युम्न गुह से, बलराम कुम्भाण्ड और कूपकर्ण से, साम्ब बाण-पुत्र से, और सात्यकि स्वयं बाण से भिड़े। ब्रह्मा, देवेश्वर, ऋषि, सिद्ध, चारण, गन्धर्व, अप्सराएँ और यक्ष विमानों में देखने जुट आए। शार्ङ्ग धनुष के बाणों से प्रभु ने शिव के अनुचरों — भूत, प्रमथ, गुह्यक, डाकिनी, यातुधान, वेताल, विनायक, प्रेत, मातृका, पिशाच, कूष्माण्ड और ब्रह्मराक्षसों — को भगा दिया। शिव पिनाक से एक के बाद एक अस्त्र छोड़ते रहे; प्रभु ने अविचलित रहकर हर अस्त्र को उसके प्रतिकार से शान्त किया — ब्रह्मास्त्र को ब्रह्मास्त्र से, वायव्यास्त्र को पर्वतास्त्र से, आग्नेयास्त्र को पर्जन्यास्त्र से, और पाशुपतास्त्र को अपने नारायणास्त्र से। फिर जृम्भणास्त्र से शिव को जँभाई लेते मोहित कर कृष्ण तलवार, गदा और बाणों से बाण-सेना पर टूट पड़े। प्रद्युम्न के बाणों से पीड़ित स्कन्द अंगों से रक्त बहाते मयूर पर हट गए; कुम्भाण्ड और कूपकर्ण बलराम के मूसल से गिरे; और नेतृत्वहीन बाण-सेना दसों दिशाओं में भाग गई।

बाण के पाँच सौ धनुष

अपनी सेना को बिखरते देख बाण सात्यकि को छोड़कर क्रोध में रथ लेकर कृष्ण पर चढ़ दौड़ा। एक साथ पाँच सौ धनुष चढ़ाकर उसने हर एक पर दो-दो बाण रखे। प्रभु ने एक ही प्रहार में हर धनुष काट डाला, सारथी, घोड़ों और रथ को गिरा दिया, और अपना शंख बजाया। तब बाण की माता कोटरा, निर्वस्त्र और खुले केश, अपने पुत्र को बचाने कृष्ण के सामने आ खड़ी हुई; प्रभु ने उसे देखना अस्वीकार कर मुख फेर लिया, और उसी क्षण रथ और धनुष से रहित बाण नगर में लौट गया।

शिव का ज्वर और विष्णु का ज्वर

भूत-प्रेतों के भाग जाने पर, मूर्च्छा से उबर चुके शिव का भेजा तीन सिर और तीन पैरों वाला ज्वर दसों दिशाओं को जलाता हुआ-सा कृष्ण पर झपटा। भगवान् नारायण ने अपना ज्वर छोड़ा, और दोनों ज्वर गुँथ गए। पराजित होकर और कहीं शरण न पाकर शिव-ज्वर भय से चिल्ला उठा, और हृषीकेश के चरणों में शरण लेकर हाथ जोड़े उनकी स्तुति करने लगा।

उसने अनन्त शक्ति वाले प्रभु को प्रणाम किया — देवताओं के शासक, सबकी आत्मा, शुद्ध चैतन्य, जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और लय के कारण, वह शान्त ब्रह्म जिसका वेद केवल संकेत कर सकते हैं। काल, दैव, कर्म, जीव, प्रकृति, शरीर, प्राण, अहंकार, विकार और सूक्ष्म शरीर का अनन्त बीज-अंकुर प्रवाह — यह सब, उसने कहा, आपकी माया है, और मैं आपकी शरण लेता हूँ, जिनमें वह माया निषिद्ध है। लीला से धारण किए रूपों द्वारा आप देवताओं और साधुओं की रक्षा करते हैं, धर्म की मर्यादा रखते हैं और हिंसकों का दमन करते हैं; यह अवतार पृथ्वी का भार उतारने के लिए है। फिर उसने स्वीकार किया:

तप्तोऽहं ते तेजसा दुःसहेन शान्तोग्रेणात्युल्बणेन ज्वरेण ।
तावत्तापो देहिनां तेऽङ्घ्रिमूलं नो सेवेरन् यावदाशानुबद्धाः ॥ २८ ॥

tapto 'haṁ te tejasā duḥsahena śāntogreṇāty-ulbaṇena jvareṇa tāvat tāpo dehināṁ te 'ṅghri-mūlaṁ no severan yāvad āśānubaddhāḥ

अर्थ: मैं आपके असह्य तेज में जल रहा हूँ, इस ज्वर में जो पहले शान्त था और अब इतना उग्र हो गया है। देहधारियों को ताप तभी तक है जब तक वे आशाओं में बँधे रहकर आपके चरणतल की सेवा नहीं करते। (स्कन्ध 10, अध्याय 63, श्लोक 28)

प्रभु ने उत्तर दिया:

त्रिशिरस्ते प्रसन्नोऽस्मि व्येतु ते मज्ज्वराद् भयम् ।
यो नौ स्मरति संवादं तस्य त्वन्न भवेद् भयम् ॥ २९ ॥

tri-śiras te prasanno 'smi vyetu te maj-jvarād bhayam yo nau smarati saṁvādaṁ tasya tvan na bhaved bhayam

अर्थ: हे त्रिशिरा, मैं तुझ पर प्रसन्न हूँ; मेरे ज्वर से तेरा भय दूर हो। जो कोई हम दोनों के इस संवाद का स्मरण करेगा, उसे तुझसे कोई भय नहीं रहेगा। (स्कन्ध 10, अध्याय 63, श्लोक 29)

अच्युत प्रभु को प्रणाम कर शिव-ज्वर चला गया। इधर बाण नया रथ लेकर जनार्दन से लड़ने फिर लौट आया।



विष्णु-ज्वर से पराजित होकर और अन्यत्र कोई शरण न पाकर शिव का भेजा त्रिशिरा ज्वर कृष्ण के चरणों की शरण लेता है और हाथ जोड़कर उनकी स्तुति करता है।

शाखाओं की भाँति गिरतीं सहस्र भुजाएँ

क्रोध से उन्मत्त असुर ने नाना शस्त्र धारण किए अपने हज़ार हाथों से चक्रधारी पर बाण बरसाए। जैसे-जैसे वह अस्त्र पर अस्त्र फेंकता गया, प्रभु ने तीक्ष्ण धार वाले सुदर्शन से उसकी भुजाएँ ऐसे काट डालीं जैसे कोई वृक्ष की डालियाँ छाँटता हो। बाण की भुजाएँ अभी गिर ही रही थीं कि भक्तवत्सल भगवान् शिव प्रभु के पास आए और बोले।

शिव की स्तुति

रुद्र ने स्तुति की: आप परम ज्योति हैं, वेदवाणी में छिपे ब्रह्म, जिन्हें शुद्धहृदय आकाश-सा निर्मल देखते हैं। आकाश आपकी नाभि है, अग्नि मुख, जल वीर्य, स्वर्ग सिर, दिशाएँ कान, पृथ्वी चरण, चन्द्रमा मन, सूर्य नेत्र; मैं आपका अहंकार हूँ, समुद्र आपका उदर, इन्द्र आपकी भुजाएँ; औषधियाँ आपके रोम, मेघ केश, ब्रह्मा बुद्धि, प्रजापति जननेन्द्रिय, धर्म हृदय। आप वह पुरुष हैं जिनके अंग ये लोक हैं। हे अक्षीण कीर्ति वाले प्रभु, यह अवतार धर्म की रक्षा और जगत् के कल्याण के लिए है; आपसे शक्ति पाकर हम सातों लोकों का शासन करते हैं। आप एक आदि पुरुष हैं, तीन अवस्थाओं से परे तुरीय, स्वयंप्रकाश, कारणरहित कारण; फिर भी अपनी माया से आप अनेक रूपों में प्रकट होते हैं ताकि गुणों का विस्तार हो सके। जैसे सूर्य अपनी ही छाया-रूप मेघों से ढँका रहकर भी मेघों और हर रूप को प्रकाशित करता है, वैसे ही आप, अपने से उत्पन्न अहंकार से मानो ढँके हुए, गुणों और गुणधारियों को प्रकाशित करते हैं।

आपकी माया से मोहित होकर, रुद्र ने आगे कहा, लोग पुत्र, पत्नी और घर से चिपके रहते हैं और शोक-सागर में डूबते-उतराते हैं।

देवदत्तमिमं लब्ध्वा नृलोकमजितेन्द्रियः ।

यो नाद्रियेत त्वत्पादौ स शोच्यो ह्यात्मवच्चकः ॥ ४१ ॥

deva-dattam imam labdhvā nṛ-lokam ajitendriyaḥ yo nādriyeta tvat-pādaḥ sa śocyo hy ātma-vañcakaḥ

अर्थ: जो आपके दिए इस मनुष्य-जन्म को पाकर भी इन्द्रियों को वश में नहीं करता और आपके चरणों का आदर नहीं करता, वह सचमुच शोचनीय है — वह अपनी ही आत्मा को ठगता है। (स्कन्ध 10, अध्याय 63, श्लोक 41)

यस्त्वां विसृजते मर्त्य आत्मानं प्रियमीश्वरम् ।

विपर्ययेन्द्रियार्थार्थं विषमत्यमृतं त्यजन् ॥ ४२ ॥

yas tvām viśṛjate martya ātmānaṁ priyam īśvaram viparyayendriyārthārthaṁ viṣam atty amṛtaṁ tyajan

अर्थ: जो मर्त्य आपको — अपनी आत्मा, अपने प्रिय ईश्वर को — आपके विपरीत विषयों के लिए त्याग देता है, वह अमृत छोड़कर विष खाता है। (स्कन्ध 10, अध्याय 63, श्लोक 42)

मैं, ब्रह्मा, देवता और शुद्धहृदय ऋषि, उन्होंने आगे कहा, अपने प्रियतम आत्मा और स्वामी आपकी शरण में सर्वभाव से आए हैं। जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और अन्त करने वाले, सबके प्रति सम, शान्त, हर प्राणी के मित्र, देवता और आत्मा, लोकों के एकमात्र आश्रय — इस जन्म-चक्र से मुक्ति के लिए हम आपकी आराधना करते हैं। फिर उनकी प्रार्थना आई: “यह बाण मेरा प्रिय और समर्पित अनुयायी है, और मैंने इसे अभय दिया है। हे प्रभु, इस पर वैसी ही कृपा कीजिए जैसी आपने दैत्यराज प्रह्लाद पर की थी।”



सुदर्शन के आगे बाण की भुजाएँ गिरते समय करुणावश शिव आगे आते हैं और प्रार्थना करते हैं कि कृष्ण उनके भक्त पर वही कृपा करें जो उन्होंने कभी प्रह्लाद पर की थी।

प्रभु को कृपा और उसका कारण

प्रभु ने उत्तर दिया: “हे पूज्य, आप जो कहते हैं और जो आपको प्रिय है, हम वही करेंगे; आपका निश्चय मुझे पूर्णतः स्वीकार है। विरोचन का यह पौत्र असुर मेरे हाथों नहीं मारा जा सकता, क्योंकि मैंने प्रह्लाद को वर दिया था कि उनके वंश का कोई भी मेरे हाथ से नहीं गिरेगा।”

दर्पोपशमनायास्य प्रवृक्णा बाहवो मया ।

सूदितं च बलं भूरि यच्च भारायितं भुवः ॥ ४८ ॥

darpopaśamanāyāsyā pravṛkṇā bāhavo mayā sūditam ca balaṁ bhūri yac ca bhārāyitam bhuvaḥ

अर्थ: मैंने इसकी भुजाएँ केवल इसका दर्प शान्त करने के लिए काटी हैं, और इसकी विशाल सेना का संहार इसलिए किया क्योंकि वह पृथ्वी का भार बन गई थी। (स्कन्ध 10, अध्याय 63, श्लोक 48)

“इसकी चार भुजाएँ बची रहेंगी,” प्रभु ने आगे कहा; “यह जरा और मृत्यु से मुक्त होगा, आपके पार्षदों में प्रमुख होगा, और असुर होकर भी इसे कहीं से भय नहीं रहेगा।”

यहाँ पूरा युद्ध अपना प्रयोजन प्रकट करता है। प्रभु ने कभी बाण का नाश चाहा ही नहीं; प्रह्लाद को दिया वचन अब भी उनके प्रपौत्र की रक्षा कर रहा था, और शिव का वचन, जिन्होंने असुर को रक्षा का आश्वासन दिया था, प्रभु ने अपना ही वचन मानकर निभाया। जो काटा गया वह केवल दर्प था, और जो कुचला गया वह केवल पृथ्वी को भार बनी सेना थी। शेष सब दिया गया: अजरता, अभय, और शिव के गणों में प्रमुख स्थान। यहाँ दण्ड और कृपा दो नहीं, एक हैं, और प्रभु पीढ़ियों के पार अपने भक्तों के पूरे परिवार के प्रति अपना वचन निभाते हैं।

अनिरुद्ध की घर-वापसी

इस आश्वासन से बाण ने कृष्ण के आगे सिर झुकाया, अनिरुद्ध और उनकी वधू ऊषा को रथ पर बिठाया और उन्हें प्रभु के सम्मुख ले आया। शिव के आशीर्वाद से प्रभु चल पड़े, आगे-आगे सुसज्जित और अलंकृत अनिरुद्ध और ऊषा, साथ एक अक्षौहिणी सेना। ध्वजाओं और तोरणों से सजी द्वारका ने, जिसकी गलियाँ जल से सिंची थीं, शंख, ढोल और नगाड़ों के साथ उनका स्वागत किया, और नगरवासी, स्वजन और ब्राह्मण उनकी अगवानी को निकल आए।



शिव के आशीर्वाद से कृष्ण अनिरुद्ध और उनकी वधू ऊषा को द्वारका ले आते हैं, जहाँ ध्वजाओं और तोरणों से सजी नगरी शंख और नगाड़ों से उनका स्वागत करती है।

शुकदेवजी ने अध्याय के फलश्रुति-वचन से समापन किया:

य एवं कृष्णविजयं शङ्करेण च संयुगम् ।

संस्मरेत् प्रातरुत्थाय न तस्य स्यात् पराजयः ॥ ५३ ॥

ya evaṁ kṛṣṇa-vijayaṁ śaṅkareṇa ca saṁyugam saṁsmaret prātar utthāya na tasya syāt parājayaḥ

अर्थ: जो प्रातः उठकर कृष्ण की इस विजय और शंकर के साथ उनके युद्ध का स्मरण करता है, उसकी कभी पराजय नहीं होती। (स्कन्ध 10, अध्याय 63, श्लोक 53)

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. दुःख तभी तक है जब तक आशा बाँधे रखती है। शिव-ज्वर स्वीकार करता है कि देहधारी तभी तक तपते हैं जब तक वे कामनाओं में बँधे और प्रभु के चरणों से दूर रहते हैं। हर प्रकार के ज्वर की औषधि उन चरणों की सेवा है।
2. स्मरण ही रक्षा है। जो प्रभु और ज्वर के संवाद को याद रखता है वह उसके भय से मुक्त है, और जो प्रातः शंकर से उनके युद्ध को याद करता है वह कभी नहीं हारता। पवित्र स्मृति स्वयं एक शरण है।
3. मनुष्य-जन्म गँवाना आत्म-वंचना है। रुद्र उसे आत्मवञ्चक कहते हैं जो मनुष्य-देह पाकर भी न इन्द्रियाँ साधता है न प्रभु के चरणों का आदर करता है, और विषयों की ओर मुड़ने को अमृत छोड़कर विष चुनना बताते हैं।
4. प्रभु पीढ़ियों के पार अपना वचन निभाते हैं। बाण प्रह्लाद को दिए वरदान के कारण जीवित है, और इसलिए भी कि प्रभु शिव के रक्षा-वचन को अपने ऊपर बाध्यकारी मानते हैं।

5. दण्ड और कृपा एक हैं। भुजाएँ केवल दर्प शान्त करने को काटी जाती हैं; जो बचता है उसे अजर और अभय बना दिया जाता है। जब प्रभु झुकाते हैं, तभी वे उठा भी रहे होते हैं।

एक भक्तिमय चिन्तन

इस अध्याय के बाद हृदय में जो रह जाता है वह शस्त्रों की टकराहट नहीं, बल्कि उसमें से उठती स्तुति की दो वाणियाँ हैं। पहली एक ज्वर की है, जो हारकर जान पाता है कि वह आरम्भ से प्रभु के ही तेज में जल रहा था, और उसकी पीड़ा उन चरणों से उसकी दूरी की माप थी। दूसरी शिव की है, भक्तों में श्रेष्ठ, जो अपने सेवक के लिए हर शस्त्र से लड़ते हैं और फिर सबसे श्रेष्ठ शस्त्र अर्पित करते हैं: एक स्तुति, जो प्रभु को हर प्राणी की आत्मा, मित्र और देवता कहती है। इन दोनों के बीच बाण खड़ा है, यह सीखता हुआ कि उसकी गर्वीली भुजाएँ कभी मुख्य बात थीं ही नहीं, और कृष्ण के हाथों उनसे वंचित होना ही सचमुच सुरक्षित हो जाना है। हम भी दर्प की सहस्र भुजाएँ और कामना का ज्वर ढोते हैं। हम उन्हें छीने जाने से पहले ही उन चरणों में रख दें, और बाण की तरह पाएँ कि प्रभु जो छोड़ते हैं, वही पर्याप्त है।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

कल प्रातः शान्त मन से इस अध्याय को याद कीजिए: नन्दी पर शिव, हाथ जोड़ता ज्वर, डालियों की तरह गिरती भुजाएँ, और कृष्ण के वचन कि उन्होंने उन्हें केवल दर्प मिटाने को काटा। फिर पूछिए कि आज कौन-सा अभिमान या लालसा आप उतार सकते हैं। आरम्भ कोमल जप से कीजिए: ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

उपसंहार

इस तिरसठवें अध्याय में अनिरुद्ध का उद्धार कृष्ण और शिव की महान भेंट की पृष्ठभूमि बनता है — एक युद्ध जो गम्भीरता से लड़ा गया और भक्ति में समाप्त हुआ। इसका हृदय प्रभु की अपनी व्याख्या है: बाण प्रह्लाद और शिव के कारण बचा, और जो उसके पास शेष रहा वह आशीर्वादित हुआ। हम हर प्रातः याद रखें कि प्रभु कैसे लड़े और कैसे क्षमा किया, और वह स्मृति हमें पराजय से बचाए।

श्रीमद्भागवतम् का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जगाए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

संदर्भ एवं आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, द्वितीय भाग), दशम स्कन्ध (उत्तरार्ध), अध्याय 63।
- शृंखला: Srimad Bhagavatam Wisdom · Biswa Sanatan Dharma Seva Trust.
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन और अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी एवं लिप्यन्तरण सहित दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश रूप में प्रस्तुत हैं। यह किसी एक प्रकाशक के सतत अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक के संबंध या समर्थन का दावा नहीं किया गया है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-10-chapter-63-lord-krishna-fights-with-banasura-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम · कल्कि अवतार इंटरनेशनल · बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

